बी.म्यूज प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी)
गायन/स्वरवाद्य
प्रथम प्रश्न पत्र
संगीत शास्त्र

समय–3 घण्टे **पूर्णांक–50**

1. संगीतोपयोगी ध्वनि की विशेषताएँ–
   तीव्रता, तारता, गुण, कालमान, उक्त सन्दर्भ में कंपन, कम्प विस्तार, आवृत्ति, उपस्वर, का परिचय।
2. संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत, चल, अचल), बाइस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना, सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), अष्टक, पूर्वांग, उत्तरांग, वर्ण, अलंकार, (पल्टा), स्थायी, अन्तरा, संचारी आभोग की परिभाषा। राग एवं थाट की परिभाषा व उनका तुलनात्मक अध्ययन, दस थाटों के नाम व स्वर, आश्रयराग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह–अवरोह, राग स्वरूप (पकड़), राग की जाति (औडव, षाडव व सम्पूर्ण) का अध्ययन।
3. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, चतुरंग, लक्षणगीत, स्वरमालिका (सरगम) भजन, मसीतखानी व रजाखानी गत का परिचय। शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोक संगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, होरी का परिचय एवं महत्व। गायन के परिक्षार्थियों के लिए तानपुरा तथा वाद्य के परिक्षार्थियों के लिए अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र वर्णन। साथ ही उनके तारों को विभिन्न स्वरों में मिलाने की जानकारी।
4. गायन और वादक के गुण–दोष, काकू आदि शब्द भेद का (संगीत रत्नाकर के आधार पर) अध्ययन।
5. पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे, अमीर खुसरो, मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास एवं तानसेन का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

बी.म्यूज प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी)
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय– 3 घण्टे **पूर्णांक–50**

1. पाठ्यक्रम के राग, यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी, वृन्दावनी, सारंग, दुर्गा, बिलावल या अल्हैया बिलावल का शास्त्रीय परिचय।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास–

   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका एवं लक्षणगीत।
   - पाठ्यक्रम के किन्हीं चार रागों में विलम्बित ख्याल।
   - पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक–एक मध्यलय ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)
   - विभिन्न रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन सहित) एवं एक तराना।

   (ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के किन्हीं चार रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल।
   - पाठ्यक्रम के रागों में से प्रत्येक में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना (आलाप तथा तानों, तोडों सहित)
   - पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीन ताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अभ्यास।
3. लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका, आवर्तन की जानकारी। तबले का संक्षिप्त परिचय। तबले की बनावट व उसके विभिन्न अंगों का सचित्र वर्णन। त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल और धमार, तालों का परिचय ठाह सहित ताल–लिपि में लेखन।
4. मींड, कण, खटका मुर्की, आलाप, तान, बोल (मिजराब/जवा के बोल) प्रहार (आकर्ष/अपकर्ष), सूत, ज़मज़मा, और तोडा का पारिभाषिक परिचय। पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे स्वरलिपि का ज्ञान।
5. लगभग 400 शब्दों में संगीत संबधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

बी.म्यूज प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी)
प्रायोगिक

समयः30 मिनिट **पूर्णांक–100**

1. किन्हीं दो थाटों में दस–दस अलंकारों का अभ्यास। गायन के विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका और लक्षणगीत का गायन।
2. पाठ्यक्रम के राग– यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी, वृन्दावनी, सारंग, दुर्गा, बिलावल या अल्हैया बिलावल।
   - अ पाठ्यक्रम के किन्ही चार रागों में विलम्बित ख्याल/विलंबित रचना/मसीतखानी गत का अभ्यास।
   - ब पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रज़ाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन।
   - स पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद तथा एक तराने का गायन अथवा किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का अपने वाद्य पर प्रदर्शन।

3. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम्/भजन/देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन अथवा वादन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
4. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन–
   त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल एवं धमार तथा त्रिताल की दुगुन का अभ्यास।

बी.म्यूज द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
गायन/स्वरवाद्य
प्रथम प्रश्नपत्र
संगीत शास्त्र

समय–3 घण्टे **पूर्णांक–75**

1. टोन, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, अनुनाद, डोल, उपस्वर (स्वयंभु स्वर), प्रतिध्वनि, तरंगमान तथा तरंग वेग, ग्रंथि–प्रतिग्रंथि, स्वर अंतराल प्रमुख स्वर संवादो का अध्ययन। स्केल–नेचुरल स्केल, डायटोनिक स्केल तथा टेम्पर्ड स्केल।
2. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक सप्तकों का तुलनात्मक अध्ययन। पूर्वांग–उत्तरांग राग। वादी, संवादी स्वर से राग गायन के समय का संबंध, संधिप्रकाश राग, अध्वदर्शक स्वर, परमेल, प्रवेशक राग की जानकारी।
3. राग के ग्रह आदि दस लक्षण। आविर्भाव, तिरोभाव, नायकी, गायकी, वाग्गेयकार की परिभाषा लक्षण एवं प्रकार। गमक की परिभाषा और उसके प्रकार।
4. मुगल काल से अब तक का संगीत का संक्षिप्त इतिहास।
5. सदारंग/अदारंग, गोपाल नायक, बैजू बख्शू हस्सू' हद्दू खाँ, भास्कर बुआ बखले, बाबा अलाउद्दीन खाँ, उ. हाफिज अली खाँ एवं उ. इनायत खाँ तथा पं. पन्नालाल घोष का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
6. तत् (तंत्री), अवनद्ध, घन एवं सुषिर वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन। वितत् वाद्य का स्पष्टीकरण। गायन के विद्यार्थी के लिए तानपूरा का एवं वाद्य के विद्यार्थी हेतु अपने–अपने वाद्य का संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन।

बी.म्यूज द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय–3 घण्टे **पूर्णांक–75**

1. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय अध्ययन एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन– बागेश्री, बिहाग भीमपलासी, आसावरी, कामोद, केदार, देश, भैरवी, हमीर और पटदीप।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किन्हीं पांच रागों में विलम्बित ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)
- एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, चौगुन सहित) तथा एक तराना।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किन्ही पांच रागों में (आलाप, तानों/तोड़ो सहित) एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल। (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित)
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना। (आलाप तथा तानों/तोडों सहित)
- पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अभ्यास।

3. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा रूपक, तीव्रा तथा सूलताल के ठेकों का ज्ञान एवं दुगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास।
4. बोल आलाप, बोलतान, कृन्तन, जोड़, झाला, तारपरन तथा लागडाट की परिभाषा । ठुमरी, कजरी, चैती और कव्वाली का परिचय। तान के प्रकार। पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर स्वरलिपि व ताललिपि पद्धति का अध्ययन।
5. संगीत संबंधी विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लेखन।

बी.म्यूज द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
प्रायोगिक परीक्षा

समय– 30 मिनिट **पूर्णांक–150**

1. पाठ्यक्रम के राग बागेश्री, बिहाग भीमपलासी, आसावरी, कामोद केदार, देश, भैरवी, हमीर और पटदीप। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिछले पाठ्यक्रम के रागों की पुनरावृत्ति।
   - अ पाठ्यक्रम के किन्ही पाँच रागों में एक–एक विलम्बित ख्याल (आलाप–तान सहित) का गायन अथवा विलम्बित रचना/मसीतखानी गत (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित) का प्रदर्शन।
   - ब पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन।
   - स पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों मे एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन अथवा पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
   - द गायन के विद्यार्थी हेतु पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षण गीत का गायन।
2. भजन/देशभक्ति गीत या सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन अथवा वाद्य पर प्रदर्शन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
3. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह एवं दुगुल में बोलकर प्रदर्शन– त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा तथा सूलताल।

बी.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)
गायन/स्वरवाद्य
प्रथम प्रश्नपत्र
संगीत शास्त्र

समय– 3 घण्टे **पूर्णांक–75**

1. गांधर्व गान, निबद्ध और अनिबद्ध गान का सामान्य परिचय। अनिबद्ध के अंतर्गत रागालप्ति एवं रूपकालप्ति के भेद–प्रभेदों का अध्ययन। मार्ग–देशी का प्रारंभिक परिचय। ग्राम–मूर्च्छना के लक्षण और भेदों का अध्ययन।
2. भरत का श्रुति–निदर्शन एवं शारंगदेव द्वारा उल्लिखित चतुःसारणा का परिचय। वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध–विकृत स्वरों की स्थापना विधि एवं पं. श्री निवास द्वारा उसका स्पष्टीकरण। ग्राम राग , देशीराग का वर्गीकरण, राग'रागिनी का वर्गीकरण का परिचय। थाट–राग वर्गीकरण तथा शुद्ध, छायालग, और संकीर्ण राग वर्गीकरण का अध्ययन।
3. पं. व्यंकटमखी के 72 मेल, उत्तर भारतीय संगीत में एक सप्तक से 32 थाटों की निर्माण विधि एवं एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति। ग्राम–मूर्च्छना और मेल की तुलना।
4. घराने की परिभाषा एवं स्पष्टीकरण। ख्याल के ग्वालियर, आगरा, दिल्ली, पटियाला, जयपुर और किराना घरानों का सामान्य परिचय तथा सेनिया घराने की सामान्य जानकारी।
5. उ. बडे गुलाम अली खां, पं. गजाननराव जोशी, पं. रविशंकर, उं. विलायत खाँ, पं. वी.जी. जोग, उ. बिस्मिलाह खाँ और पं. हरिप्रसाद चौरसिया का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

बी.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय– 3 घण्टे **पूर्णांक– 75**

1. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन– जैजैवन्ती, मालकौस, जोनपुरी, पूरिया, छायानट, बहार, तोड़ी, बसन्त, रामकली, ललित, तिलककामोद और पूरियाधनाश्री।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में (आलाप तथा तानों सहित) विलम्बित रचना का प्रदर्शन।
   - पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल का (आलाप तथा तानों सहित) गायन।
   - एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित) एवं एक तराना।

   (ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के छः रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल का (आलाप तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।
   - पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना का (आलाप तथा तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।
   - किसी एक राग में तीनताल से पृथक अन्य ताल में रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।
3. आड, कुआड, बियाड लयों की जानकारी। त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाडा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी तथा झूमरा तालों का परिचय उन्हें तिगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास।
4. स्वरलिपि एवं उसकी उपयोगिता। भारत में प्रचलित स्वरलिपियों का सामान्य ज्ञान। स्टाफ नोटेशन (स्वरलिपि) पद्धति का सामान्य परिचय। पाठ्यक्रम के रागों के आरोह–अवरोह व पकड़ का इस पद्धति में लेखन। हार्मनी और मेलोडी।
5. लगभग 500 शब्दो में सगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

बी.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)
प्रायोगिक मौखिक

समय– 30 मिनिट **पूर्णांक–100**

1. पाठ्यक्रम के राग–जैजैवन्ती, मालकौस, जौनपुरी, पूरिया, छायानट, बहार, तोडी, बसन्त, रामकली, ललित, तिलककामोद और पूरियाधनाश्री । तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिछले पाठ्यक्रम के रागों की पुनरावृत्ति।

   अ पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में एक–एक विलम्बित ख्याल (आलाप–तान सहित) का गायन अथवा विलम्बित रचना/मसीतखानी गत (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित) का प्रदर्शन।

   ब पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन

   स पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन। अथवा किसी एक राग में तीनताल से पृथक ताल मे रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।

2. भजन/देशभक्ति गीत या सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन अथवा वाद्य पर प्रदर्शन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
3. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर बोलकर प्रदर्शन–

   अ. त्रिताल, एकताल, दादर, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाडा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आडाचौताल, दीपचंदी एवं झूमरा तालों की ठाह दुगुन एवं चौगुन।

   ब. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा का तिगुन में प्रदर्शन।

बी.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)
प्रायोगिक मंच प्रदर्शन

समय– 20 मिनिट **पूर्णांक–50**

1. पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक राग में विलम्बित/मसीतखानी गत, मध्यलय/रजाखानी गत या द्रुतलय की रचना को विस्तृत आलाप, तान व तिहाईयां सहित प्रदर्शन।
2. सुगम संगीत का (चित्रपट, संगीत को छोडकर) गायन/वादन। किसी राग या लोकसंगीत पर आधारित धुन का प्रदर्शन।

बी. म्यूज प्रथम वर्ष
(गायन विषय के विद्यार्थियों के लिये)
सहायक विषय – तबला
(शास्त्र)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक :

इकाई –1

1. तबले के विभिन्न अंगों का सचित्र वर्णन एवं उनकी उपयोगिता।
2. तबले के वर्ण तथा उनकी निकास विधि।

इकाई –2

1. भातखण्डे ताललिपि पद्धति का ज्ञान और उसमें क्रियात्मक सामग्री को लेखन की क्षमाता।
2. निम्नांकित तालों को एकगुन, दुगुन तथा चौगुन की लयकारियों को ताललिपि में लिखना :– त्रिताल, एकताल, झपताल, कहरवा, रूपक, दादरा।

इकाई –3

1. तबले का ऐतिहासिक परिचय।
2. निम्नांकित तबला वादकों का जीवन परिचय।
   उस्ताद लतीफ अहमद खॉ, उस्ताद हबीबुद्दीन खॉ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, पं. रामसहाय मिश्र।

इकाई – 4

1. ध्रुपद, धमार, बडा ख्याल, छोटा ख्याल, तराना– इन गायन शैलियों का परिचय।
2. शास्त्रीय गायन की विभिन्न शैलियों के साथ तबला संगति की जानकारी।

इकाई – 5

1. तबले के दिल्ली घराने तथा अजराडा घराने एवं उनकी वादन शैलियों की विशेषताओं का ज्ञान।
2. निम्नलिखित की सोदाहरण परिभाषा :–
   ताल, लय, मात्रा, विभाग, ताली, खाली, ठेका, सम, आवर्तन।

बी. म्यूज प्रथम वर्ष
(गायन विषय के विद्यार्थियों के लिये)
सहायक विषय – तबला
(प्रायोगिक)

पूर्णांक :

1. तबले के वर्णों की निकास विधि का समुचित तथा विभिन्न वर्णों एवं वर्ण समूहों को तबले/बांये पर बजाने का अभ्यास।

2. त्रिताल, एकताल, झपताल, रूपक, दीपचन्दी, कहरवा तथा दादरा ताल के ठेकों को हाथ से ताली देकर एकगुन, दुगुन, में पढंत करना एवं तबले पर बजाना।

3. त्रिताल में निम्नलिखित का लहरे के साथ एकल वादन :–
   1. दो कायदे – न्यूनतम चार पल्टों तथा तिहाई सहित।
   2. न्यूनतम दो मुखडे।
   3. पहली, पांचवी, नवीं तथा तेरहवीं मात्राओं से उठने वाली तिहाईयॉ बजाने की क्षमता।

4. झपताल में न्यूनतम दो तिहाईयॉ (दमदार, बेदम) बजाने तथा पढने की क्षमता।

5. कहरवा तथा दादरा ताल के ठेके के दो–दो प्रकार।

6. ठेकों के प्रकार :– त्रिताल, झपताल, रूपक।

7. गायन शैलियों के साथ तबला संगति का अभ्यास।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास जी
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा